नमस्कार

देवनागरी

देवनागरी लिपि का जन्म और विकास

भारत में तीन लिपियों के लेख मिलते हैं- सिन्धु घाटी, खरोष्ठी लिपि तथा ब्राह्मी लिपि । सिन्धु घाटी की लिपि अभी तक पूर्णतः पढ़ी नहीं गयी है। खरोष्ठी लिपि के प्रमाणों में मुख्य रूप से शहबाज गढ़ी तथा मान-सेता में खरोष्ठी के शिलालेख मिले हैं। इन दोनों का ही सम्बन्ध देवनागरी से नहीं है।

ब्राह्मी लिपि (Brahmi Script)

तीसरी लिपि है- ब्राह्मी, 500 ई. पू. से 350 पू. में ब्राह्मी लिपि भारत में प्रायः सर्वत्र ही प्रयुक्त होती रही है। आगे चलकर इसकी दो धाराएँ हो गईं-उत्तरी और दक्षिणी । उत्तरी भारत की चार प्रमुख लिपियों में ही एक का नाम 'प्राचीन देवनागरी है। यह प्राचीन देवनागरी लिपि ब्राह्मी लिपि की उत्तरी धारा के एक रूप 'कुटिल-लिपि' से विकसित मानी जाती है। यह तो केवल ब्राह्मी की लिपियों का वर्णन है। ब्राह्मी तो इससे बहुत प्राचीन होनी चाहिए।

प्राचीन नागरी लिपि

ब्राह्मी लिपि की उत्तरी धारा की एक लिपि कुटिल लिपि से विकसित प्राचीन देवनागरी का प्रचार उत्तरी भारत में रहा है। इस लिपि का उद्भव 700 ई. के आसपास माना जाता है। आवागमन के कारण यह प्राचीन नागरी लिपि दक्षिण में भी गयी, जहाँ इसे, 'नन्दि नागरी' के नाम से जाना जाता था। इसका एक अन्य नाम 'ग्रन्थम् लिपि' भी है। वैसे दक्षिण में इसका प्रचार सोलहवीं सदी तक मिलता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश आदि के शिलालेख इसी प्राचीन नागरी में उत्कीर्ण मिलते हैं। नवीं से बारहवीं शताब्दी तक तो यही प्राचीन नागरी लिपि प्रचलन में थी। बारहवीं शताब्दी से वर्तमान नागरी लिपि या देव नागरी लिपि का प्रचार बढ़ा।

वर्तमान नागरी लिपि का उद्भव

(Devanagari)

वर्तमान देवनागरी लिपि और नागरी लिपि एक ही है। इसकी प्राचीनता तथा इसके विकास के विषय में महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा ने 'भारतीय प्राचीन लिपि' नामक ग्रन्थ में लिखा है-

"दसवीं शताब्दी के उत्तरी भारत की नागरी लिपि में कुटिल लिपि के अ, आ, घ, प, य, ष और स के सिर के

दो अंशों में विभक्त मिलते हैं, परन्तु ग्यारहवीं शताब्दी की वर्तमान नागरी से मिलती-जुलती है और बारहवीं शताब्दी से वर्तमान नागरी बन गयी। बारहवीं शताब्दी से लगातार अब तक नागरी लिपि बहुधा एक ही रूप में चली आ रही है।"

ओझा के इस लेख से स्पष्ट है कि वर्तमान देवनागरी लिपि या नागरी लिपि का उद्भव 1200 ई. के लगभग हुआ, जबकि प्राचीन नागरी लिपि 800 ई. के बाद से 1200 तक रही है।

नागरी या देवनागरी लिपि का विकास

इस लिपि के अनेक प्रमाण 700 ई. के बाद से मिलने लगते हैं। यद्यपि है यह प्राचीन नागरी लिपि, फिर भी देवनागरी के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इसका प्रथम प्रयोग गुजरात के राजा 'जय भट्ट' (800 ई. के लगभग) के एक शिलालेख में हुआ है। इसके बाद राष्ट्रकूट नरेशों के कुछ शिलालेखों से पता लगता है कि उसके राज्य में भी 'नागरी लिपि' का प्रचार था। उधर दक्षिण में विजय नगर राज्य तथा कोंकण (बम्बई) में भी इसी लिपि का प्रयोग होता था। इस दक्षिणी प्रमाणों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि 'नागरी' का आरम्भ दक्षिण में हुआ है। इतना होने पर भी यह लिपि मुख्यत: उत्तर भारत की लिपि मानी जाती है।

गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश में जितने भी हस्तलेख, ताम्र पत्र व शिलालेख मिले हैं, वे अधिकतर नागरी लिपि में ही हैं। यह लिपि आजकल हिन्दी (उप बोलियों-बोलियों सहित), संस्कृत, मराठी और नेपाली के लिये प्रयुक्त होती है। महाराष्ट्र में इसे 'नागरी' न कहकर 'बाल बोध' कहते हैं। इसी बाल-बोध नागरी के अ, छ, झ, न और प्र (र) वर्ण अल्प देवनागरी ने भी अपना लिये हैं।

आरम्भ में देवनागरी के वर्षों पर शिरोरेखा नहीं लगाते थे। इसी प्रकार अ, घ, म, य, ष और 'स' के सिर दो भागों में बँटे हुए थे। बारहवीं शताब्दी से वर्तमान देवनागरी वर्गों का लेखन देखा जाये तो पता लगेगा कि इस लिपि को सुन्दर बनाने का प्रयास आज तक हो रहा है। इसीलिए आज यह सुन्दर लिपियों में मानी जाती है। छापाखाने ने तो इसके अनेक सुन्दर आकार बनाये हैं।